उनकी प्रतिभा का समाचार कॉलेज के मालिक श्री घनश्याम दास बिरला के पास पहुंचा।

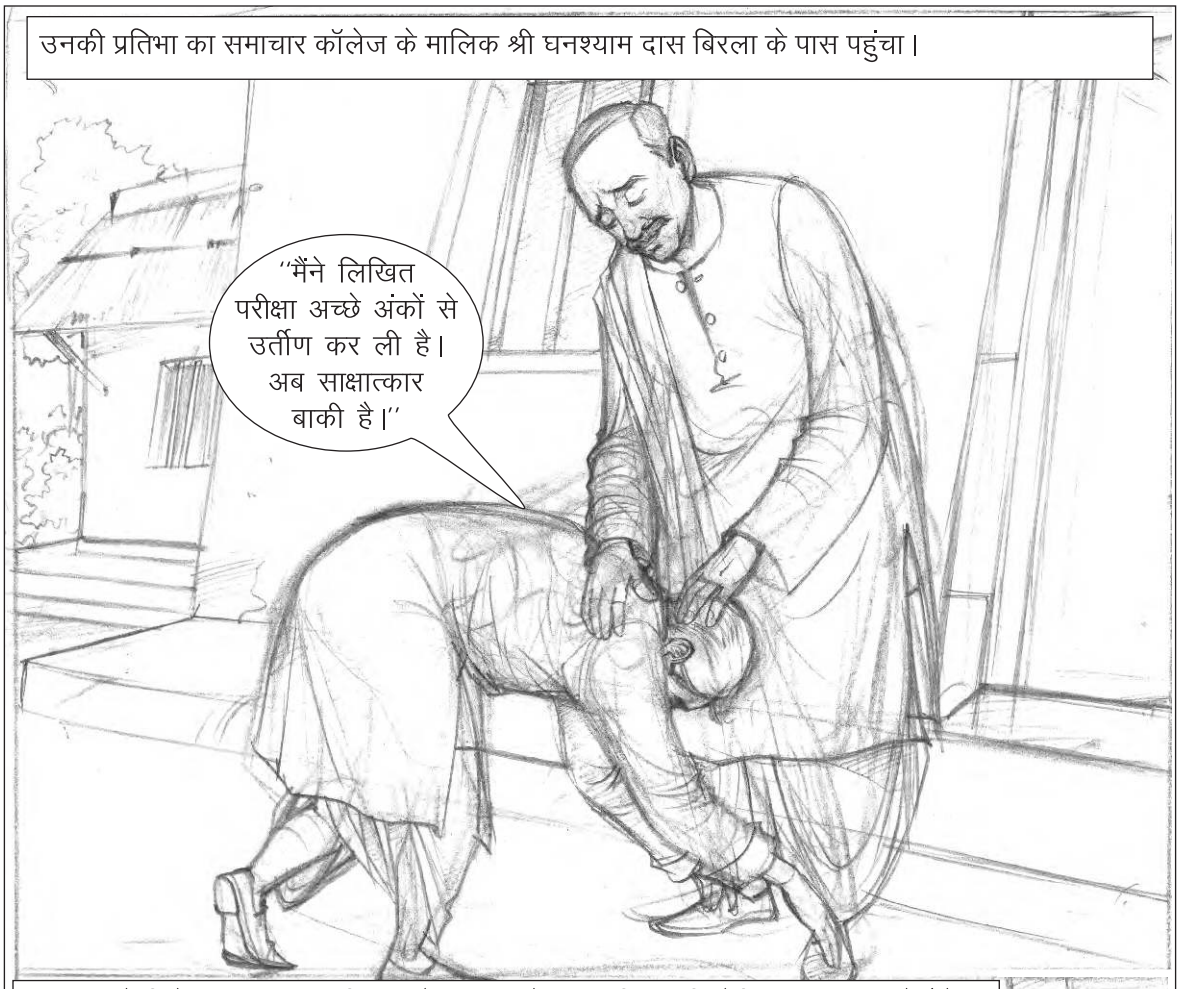

मामाजी के विशेश आग्रह पर अनिच्छा के बावजूद वे प्रशासनिक प्रतियोगिता की परीक्षा में बैठे।